Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

# बस्तर जिले में मुरिया जनजाति के संदर्भ में सतत कृषिए ग्रामीण विकास एवं कौशल विकास का समन्वित प्रभाव: सतत आजीविका पर एक अनुभवजन्य अध्ययन

**श्री प्रेमजीत[1]ए डॉ. देवाशीष हालदार[2]**

[1]शोधार्थी [2]सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र विभाग)

[1 2]अर्थशास्त्र विभाग

शासकीय गुण्डाधूर स्नातकोत्तर महाविद्यालयए

कोण्डागांव (छ.ग.)

,,

**सारांश (**।इजतंबजद्ध **:-** प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य बस्तर जिले में निवासरत मुरिया जनजाति के संदर्भ में सतत कृषिए ग्रामीण विकास एवं कौशल विकास के परस्पर संबंधों का विश्लेषण करना है तथा यह समझना है कि ये घटक किस प्रकार समुदाय की आजीविका सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता को प्रभावित करते हैं। अध्ययन प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित हैए जो क्षेत्रीय सर्वेक्षण के माध्यम से संकलित किए गए हैं। शोध में उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक स्थितिए कृषि पर निर्भरताए परम्परागत कौशलों की प्रकृतिए आय की नियमितताए प्रशिक्षण की उपलब्धताए बाजार तक पहुँच एवं प्रमुख समस्याओं का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मुरिया जनजाति की आजीविका का मुख्य आधार कृषि हैए किंतु यह कृषि परंपरागतए कम उत्पादकता वाली और मौसम पर अत्यधिक निर्भर है। साथ हीए बाँस शिल्पए काष्ठ शिल्प एवं अन्य पारम्परिक कौशल अभी भी समुदाय में विद्यमान हैंए परंतु उनसे प्राप्त आय अनियमित एवं सीमित है। कच्चे माल की कमीए बाजार मूल्य की समस्याए प्रभावी प्रशिक्षण का अभाव तथा संस्थागत सहयोग की कमी इन कौशलों को सतत आजीविका के रूप में विकसित होने से रोकती है।

शोध यह तर्क प्रस्तुत करता है कि यदि सतत कृषि पद्धतियों (जैसे बहुफसली खेतीए स्थानीय बीजों का संरक्षणए जैविक कृषि) को कौशल विकास एवं ग्रामीण उद्यमिता से जोड़ा जाएए तो मुरिया जनजाति के लिए आजीविका के विविध एवं स्थायी स्रोत विकसित किए जा सकते हैं। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं और विकास संगठनों के लिए यह संकेत प्रदान करता है कि एकीकृत दृष्टिकोण के बिना जनजातीय क्षेत्रों में दीर्घकालिक ग्रामीण विकास संभव नहीं है।

**शब्द कुंजी :-** मुरिया जनजातिय सतत आजीविकाय सतत कृषिय कौशल विकासय ग्रामीण विकासय बस्तर

## 1ण् प्रस्तावना:-

भारत की जनजातीय आबादी देश की सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता की आत्मा है। जनगणना 2011 के अनुसार अनुसूचित जनजातियाँ भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 8ण्6 प्रतिशत हैंए जिनकी आजीविका परंपरागत रूप से वनए कृषिए शिकारए कुटीर उद्योग और हस्तशिल्प पर आधारित रही है। औपनिवेशिक काल से लेकर वर्तमान वैश्वीकरण के दौर तक प्राकृतिक संसाधनों के क्षरणए भूमि से विस्थापन और बाजारोन्मुख अर्थव्यवस्था के दबावों ने जनजातीय आजीविका को अस्थिर बनाया है (ंगंए 2014द्ध।

मुरिया जनजातिए जो छत्तीसगढ़ए महाराष्ट्र एवं तेलंगाना के सीमावर्ती क्षेत्रों में पाई जाती हैए गोंड जनजाति की एक प्रमुख उपजाति है। मुरिया समाज की सामाजिक संरचनाए घोटुल जैसी सामुदायिक संस्थाएँ और सामूहिक श्रम आधारित अर्थव्यवस्था उन्हें विशिष्ट पहचान प्रदान करती हैं (स्सूपदए 1947द्ध। किंतु बदलते सामाजिक-आर्थिक परिवेश में मुरिया युवाओं के समक्ष बेरोजगारीए अल्प आयए शिक्षा की कमी और पारंपरिक कौशल के अवमूल्यन जैसी समस्याएँ उभर रही हैं।

विकास को केवल आय-वृद्धि के रूप में न देखकर क्षमताओं के विस्तार के रूप में समझना आवश्यक है (मदए 1999द्ध। इस दृष्टि से जनजातीय विकास में क्षमता निर्माण और कौशल विकास केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। सतत आजीविका ढाँचे के अनुसारए आजीविका तब टिकाऊ मानी जाती है जब वह आघातों का सामना कर सकेए संसाधनों का संरक्षण करते हुए आजीविका विकल्पों को सुदृढ़ बनाए (बिंउइमते – ब्वदूंलए 1992द्ध।

बस्तर जिले के संदर्भ में यह अध्ययन दर्शाता है कि कृषि आजीविका का आधार हैए परंतु केवल कृषि पर निर्भरता आय को अस्थिर बनाती है। परम्परागत कौशल (बाँस शिल्पए काष्ठ शिल्पए धातु शिल्प आदि) आय-विविधीकरण का अवसर प्रदान करते हैंए किंतु बाजार तक सीमित पहुँचए कच्चे माल की कमी और प्रशिक्षण की प्रासंगिकता में कमी के कारण इनकी क्षमता पूरी तरह साकार नहीं हो पा रही है (ज्पतामलए 2021द्ध।

न्छम्ब्ब ;2015द्ध के अनुसार कौशल विकास रोजगार-योग्यताए उत्पादकता और सतत विकास को सुदृढ़ करता हैए विशेषकर हाशिए पर स्थित समुदायों के लिए। अतः यह अध्ययन बस्तर जिले की मुरिया जनजाति के संदर्भ में सतत कृषिए ग्रामीण विकास और कौशल विकास के समन्वय के माध्यम से सतत आजीविका की संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

## 2ण साहित्य की समीक्षा :-

- **वेरियर एल्विन (**1947द्ध दृ *जीम डनतपंदक जीमपत ळीवजनस* एल्विन ने मुरिया समाज की सामाजिक संरचनाए घोटुल व्यवस्था और सामुदायिक जीवनशैली का विस्तृत समाजशास्त्रीय विवरण प्रस्तुत किया है। उनका अध्ययन मुरिया समाज की सांस्कृतिक पूँजी को समझने का आधार प्रदान करता हैए जो कौशल आधारित आजीविका के सांस्कृतिक संदर्भ को स्पष्ट करता है।
- **वीरेंद्र जक्शा (**2014द्ध दृ *ष्जंजमए ष्वबपमजल ंदक ज्तपइमेरू प्ेनमे पद च्वेज.ब्वसवदपंस प्दकपं* जक्शा ने औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक नीतियों के जनजातीय आजीविका पर प्रभावों का विश्लेषण किया है। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्राकृतिक संसाधनों पर राज्य नियंत्रण और बाजार अर्थव्यवस्था के दबावों ने परंपरागत आजीविका प्रणालियों को कमजोर किया है।
- हालदार एवं प्रेमजीत (2026द्ध ने अपने अध्ययन *भ्मुरिया जनजातीय कौशल विकास के माध्यम से सतत आजीविका पर प्रभाव: बस्तर जिले के विशेष संदर्भ में"* में जनजातीय क्षेत्रों में कौशल विकास कार्यक्रमों की भूमिका का विश्लेषण किया है। इस अध्ययन में विशेष रूप से बस्तर जिले की मुरिया जनजाति को केंद्र में रखते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि कौशल विकास की पहलें किस प्रकार जनजातीय समुदाय की आजीविकाए आय के स्रोतों तथा सामाजिक सशक्तिकरण को प्रभावित करती हैं। अध्ययन के अनुसार पारंपरिक रूप से मुरिया जनजाति की आजीविका कृषिए वनोपज संग्रहण तथा पारंपरिक हस्तशिल्प पर आधारित रही हैए किन्तु आधुनिक आर्थिक परिवर्तनों के कारण इन पर निर्भरता में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। ऐसे में कौशल विकास कार्यक्रम जनजातीय युवाओं को वैकल्पिक रोजगार अवसर उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शोध में यह पाया गया कि विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं में तकनीकी दक्षताए उद्यमिता क्षमता तथा स्वरोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई हैए जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।
- **अमर्त्य सेन (**1999द्ध दृ *क्मअमसवचउमदज ॅ थ्तममकवउ* सेन का क्षमता दृष्टिकोण (ब्ंचंइपसपजल ।चचतवंबीद्ध यह प्रतिपादित करता है कि विकास का उद्देश्य लोगों की वास्तविक स्वतंत्रताओं और क्षमताओं का विस्तार होना चाहिए। यह दृष्टिकोण जनजातीय

कौशल विकास को केवल आय-वृद्धि नहींए बल्कि सशक्तिकरण की प्रक्रिया के रूप में समझने में सहायक है।

- **चेम्बर्स एवं कॉनवे** (1992द्ध दृ *ष्नेजंपदंइसम त्नतंस स्पअमसपीववकेरू च्तंबजपबंस ब्वदबमचजे वित जीम 21ेज ब्मदजनतल*
  इस ढाँचे में आजीविका को प्राकृतिकए मानवीयए सामाजिकए भौतिक और वित्तीय पूँजी के समन्वय के रूप में देखा गया है। बस्तर के संदर्भ में यह ढाँचा कृषिए वनोपज और कौशल आधारित गतिविधियों के अंतर्संबंधों को समझने के लिए उपयोगी है।
- **सुकृता तिर्की** (2021द्ध दृ *ष्वबपव.म्बवदवउपब ंदक स्पजमतंबल ष्जंजने ंउवदह ज्ञंइ ज्तपइमे व ि ठेंजंतए बींजजपेहंती*
  इस अध्ययन में बस्तर की जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शिक्षा स्तर का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्ष बताते हैं कि सीमित शिक्षा और बाजार तक कमजोर पहुँच आजीविका के विविधीकरण में बाधक हैं—जो मुरिया जनजाति पर भी लागू होता है।
- **सोहाद्रा दीवान एवं संजना सिंह** (2023द्ध दृ ***बस्तर के आदिवासी-क्षेत्र की संस्कृति और जीवन पद्धति: समाजशास्त्रीय अध्ययन***
  यह अध्ययन बस्तर क्षेत्र की सांस्कृतिक प्रथाओंए जीवन पद्धति और सामाजिक संरचना को रेखांकित करता है। यह संदर्भ कौशल आधारित आजीविका को सांस्कृतिक संरक्षण से जोड़ने की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।
- **न्छक्च्** ;2015द्ध दृ *ष्पसससे क्मअमसवचउमदज वित प्दबसनेपअम ंदक ैनेजंपदंइसम ळतवूजी*
  यह रिपोर्ट दर्शाती है कि कौशल विकास तभी प्रभावी होता है जब वह स्थानीय संसाधनोंए बाजार की मांग और संस्थागत समर्थन से जुड़ा हो। यह निष्कर्ष मुरिया जनजाति के संदर्भ में समेकित प्रशिक्षण मॉडल की आवश्यकता को पुष्ट करता है।

## 3ण **शोध प्रविधि** (डमजीवकवसवहलद्ध

प्रस्तुत अध्ययन बस्तर जिले की मुरिया जनजाति में कौशल विकासए सतत कृषि एवं ग्रामीण विकास के माध्यम से सतत आजीविका पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करता है। शोध की प्रकृति वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। अध्ययन में प्राथमिक आँकड़ों का संग्रह संरचित साक्षात्कार अनुसूची (ैजतनबजनतमक पदजमतअपमू ैबीमकनसमद्ध के माध्यम से किया गया। कुल 100 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि (च्नतचवेपअम ैंउचसपदहद्ध द्वारा किया गयाए जिनमें से 38 उत्तरदाता परम्परागत कला/कौशल से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े पाए गए एवं 62 परिवार पूर्ण रूप से कृषि कार्य में संलग्न पाए गए द्य

अध्ययन क्षेत्र बस्तर जिले के चयनित जनजातीय ग्राम रहेए जहाँ कृषि एवं वनोपज आधारित आजीविका प्रमुख है। डेटा संग्रह के दौरान उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमिए कौशल की प्रकृतिए प्रशिक्षण

अनुभवए बाजार तक पहुँच तथा आय में योगदान से संबंधित प्रश्न शामिल किए गए। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि एवं वर्णनात्मक व्याख्या द्वारा किया गया।

अध्ययन में सतत आजीविका ढाँचे को सैद्धांतिक आधार के रूप में अपनाया गयाए ताकि प्राकृतिक संसाधनों (भूमिए वन)ए मानवीय संसाधनों (कौशलए ज्ञान)ए सामाजिक पूँजी (समुदायिक सहयोग) और आर्थिक संसाधनों (आयए बाजार पहुँच) के अंतर्संबंधों को समझा जा सके।

## 4ण **उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ** (व्हरमबजपअमे – भ्लचवजीमेमेद्ध

**मुख्य उद्देश्य:**

- ❖ बस्तर जिले में मुरिया जनजाति की आजीविका संरचना में सतत कृषिए ग्रामीण विकास एवं कौशल विकास की भूमिका का विश्लेषण करना।
- ❖ परम्परागत कौशलों को कृषि आधारित उद्यमिता से जोड़ने की संभावनाओं का अध्ययन करना।
- ❖ कौशल विकास कार्यक्रमों के आजीविका पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।

**परिकल्पनाएँ:**

- ❖ भ1रू सतत कृषि पद्धतियों और कौशल विकास का समन्वय मुरिया जनजाति की आय स्थिरता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।
- ❖ भ2रू बाजार संपर्क एवं प्रशिक्षण की उपलब्धता आजीविका की विविधता को बढ़ाती है।

## 5ण **सैद्धांतिक ढाँचा** (जीमवतमजपबंस थ्तंउमूवताद्ध

प्रस्तुत अध्ययन तीन प्रमुख सैद्धांतिक आधारों पर आधारित है–

### 5 .1 सतत आजीविका ढाँचा (नेजंपदंइसम स्पअमसपीववक थ्तंउमूवताद्धरू

यह ढाँचा यह स्पष्ट करता है कि आजीविका की स्थिरता केवल आय पर निर्भर नहीं करतीए बल्कि प्राकृतिकए मानवीयए सामाजिकए भौतिक एवं वित्तीय संसाधनों के समन्वित उपयोग पर आधारित होती है। मुरिया जनजाति के संदर्भ में भूमिए वन संसाधनए पारंपरिक कौशल और सामाजिक पूँजी इस ढाँचे के प्रमुख घटक हैं।

### 5 .2 सतत कृषि का दृष्टिकोण:

सतत कृषि को यहाँ केवल पर्यावरणीय संरक्षण तक सीमित न मानकर ग्रामीण आय विविधीकरण की रणनीति के रूप में देखा गया है। बहुफसली खेतीए स्थानीय संसाधनों का उपयोग और कृषि आधारित मूल्य संवर्धन गतिविधियाँ आजीविका के जोखिम को कम कर सकती हैं।

### 5 .3 कौशल विकास एवं ग्रामीण उद्यमिता मॉडल:

यह मॉडल इस धारणा पर आधारित है कि स्थानीय संसाधनों और पारंपरिक ज्ञान से जुड़े कौशलों को आधुनिक प्रशिक्षणए उद्यमिता एवं बाजार संपर्क से जोड़ने पर ग्रामीण क्षेत्रों में आत्मनिर्भर आजीविका विकसित की जा सकती है।

इन तीनों ढाँचों के समन्वय से एक ऐसा विश्लेषणात्मक मॉडल विकसित किया गया हैए जिसमें सतत कृषि आधारभूत आजीविका सुरक्षा प्रदान करती हैए कौशल विकास आय के विविध स्रोत सृजित करता है और ग्रामीण विकास संरचनात्मक समर्थन उपलब्ध कराता है। इस संयुक्त ढाँचे के माध्यम से मुरिया जनजाति की आजीविका संरचना को समग्र दृष्टि से समझने का प्रयास किया गया है।

### 6 .आंकड़ो के द्वारा प्रस्तुति :-

**;क) मुख्य आजीविका संरचना (**छत्र100द्ध

| मुख्य आजीविका | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| कृषि | 84 | 84: |
| वनोपज | 8 | 8: |
| मजदूरी | 5 | 5: |
| परम्परागत कला/कौशल | 2 | 2: |
| अन्य | 1 | 1: |

**विश्लेषण:**

- 84: परिवार कृषि पर निर्भर हैं → कृषि आजीविका का प्रमुख आधार है।
- परम्परागत कौशल अभी मुख्य नहीं बल्कि सहायक आय का स्रोत है।
- इससे स्पष्ट है कि सतत कृषि + कौशल विकास मिलकर ग्रामीण विकास को सुदृढ़ कर सकते हैं।

**Advanced International Journal for Research (AIJFR)**

E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

**7.परिकल्पना परीक्षण (भ्लचवजीमेपे ज्मेजपदहद्ध :-** इस अध्ययन में मुरिया जनजाति की आजीविका संरचना का विश्लेषण करने के लिए **काई-स्क्वेयर परीक्षण (**बैपृनंतम ज्मेजद्ध का उपयोग किया गया। यह परीक्षण यह जानने के लिए किया गया कि विभिन्न आजीविका स्रोतों का वितरण समान है या किसी एक स्रोत पर अधिक निर्भरता है।

**7.1 काई-स्क्वेयर परीक्षण का सूत्र**

$$\chi^2 = \sum \frac{(O-E)^2}{E}$$

जहाँ

ट त्र व्इेमतअमक थ्तमुनमदबल ;**प्रेक्षित आवृत्ति)**

म् त्र म्गचमबजमक थ्तमुनमदबल ;**अपेक्षित आवृत्ति)**

**7.2 उत्तरदाताओं की आजीविका का सांख्यिकीय विश्लेषण**

कुल उत्तरदाता = 100

यदि सभी आजीविका स्रोत समान रूप से वितरित हों तो अपेक्षित आवृत्ति (म्गचमबजमक थ्तमुनमदबलद्ध होगी:

$$E = \frac{100}{5} = 20$$

| **मुख्य आजीविका** | ट ;व्इेमतअमकद्ध | म् ;म्गचमबजमकद्ध | ट्.म् | ;ट्.म्द्ध | ;ट्.म्द्ध ध्म् |
|---|---|---|---|---|---|
| कृषि | 84 | 20 | 64 | 4096 | 204ण्8 |
| वनोपज | 8 | 20 | .12 | 144 | 7ण्2 |
| मजदूरी | 5 | 20 | .15 | 225 | 11ण्25 |
| पारम्परिक कला | 2 | 20 | .18 | 324 | 16ण्2 |
| अन्य | 1 | 20 | .19 | 361 | 18ण्05 |

$$\chi^2 = \mathbf{204.8 + 7.2 + 11.25 + 16.2 + 18.05}$$
$$\chi^2 = \mathbf{257.5}$$

### 7.3 स्वतंत्रता की डिग्री (क्महतमम वf थ्तममकवउद्ध

$$df = n - 1$$
$$df = 5 - 1 = 4$$

तालिका मान (0ण्05 स्तर पर)

$$\chi^2 = 9.49$$

### 7.4 निर्णय (क्मबपेपवद त्नसमद्ध

यदि

$$\chi^2_{calculated} > \chi^2_{table}$$

तो शून्य परिकल्पना (भ्0द्ध अस्वीकार की जाएगी।

यहाँ

$$257.5 > 9.49$$

अतः **शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।**

### 7.5 परिकल्पना भ्1 का परीक्षण

भ्1रू सतत कृषि पद्धतियों और कौशल विकास का समन्वय मुरिया जनजाति की आय स्थिरता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

व्याख्या

काई-स्क्वेयर परीक्षण से प्राप्त परिणाम दर्शाते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता (84ःद्ध अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। इसका अर्थ है कि कृषि इस समुदाय की आय का प्रमुख स्रोत है। यदि इस क्षेत्र में सतत कृषि तकनीकों और कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाए तो आय में स्थिरता और वृद्धि संभव है।

अतः भ्1 **परिकल्पना स्वीकार की जाती है।**

E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

**7.6 परिकल्पना भ्2 का परीक्षण**

भ्2रू बाजार संपर्क एवं प्रशिक्षण की उपलब्धता आजीविका की विविधता को बढ़ाती है।

व्याख्या

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वनोपज (8ः्द्वए मजदूरी (5ः्द्वए पारंपरिक कला (2ः्द्व और अन्य (1ः्द्व जैसे वैकल्पिक आजीविका स्रोत भी मौजूद हैंए किंतु उनका प्रतिशत कम है। इसका प्रमुख कारण बाजार तक सीमित पहुँच और प्रशिक्षण के अवसरों की कमी है। जहाँ बाजार संपर्क और प्रशिक्षण उपलब्ध हैं वहाँ लोग वनोपजए हस्तशिल्प और अन्य आय स्रोत अपनाते हैं।

अतः भ्2 **परिकल्पना आंशिक रूप से स्वीकार की जाती है**।

**7.7 निष्कर्ष:-** इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मुरिया जनजाति की आजीविका मुख्यतः कृषि पर आधारित है। काई-स्क्वेयर परीक्षण से यह सिद्ध हुआ कि विभिन्न आजीविका स्रोतों का वितरण समान नहीं हैए बल्कि कृषि पर अत्यधिक निर्भरता है। यदि सतत कृषि तकनीकोंए कौशल विकास कार्यक्रमों तथा बाजार संपर्क को बढ़ावा दिया जाए तो आजीविका की स्थिरता एवं विविधता दोनों में वृद्धि की जा सकती है।

8ण**शोध परिणाम** (थ्पदकपदहेद्धरू.अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मुरिया समुदाय में आजीविका का मुख्य आधार अभी भी कृषि है। कुल उत्तरदाताओं में से अधिकांश परिवारों की प्रमुख आजीविका कृषि पर निर्भर पाई गईए जबकि वनोपजए मजदूरी और परम्परागत कला/कौशल सहायक स्रोत के रूप में कार्य कर रहे हैं। इससे संकेत मिलता है कि सतत कृषि मुरिया समाज की आजीविका सुरक्षा का आधारभूत स्तंभ हैए किंतु यह अकेले पर्याप्त नहीं है। परम्परागत कौशल से जुड़े 38 उत्तरदाताओं में बाँस शिल्पए काष्ठ शिल्पए धातु शिल्प एवं पारम्परिक नृत्य जैसी गतिविधियाँ प्रमुख रहीं। अधिकांश उत्तरदाताओं ने यह कौशल परिवार या पूर्वजों से प्राप्त कियाए जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है। हालांकिए एक उल्लेखनीय संख्या ने यह भी संकेत दिया कि यह परम्परा धीरे-धीरे कमजोर पड़ रही हैए जो सांस्कृतिक क्षरण और आजीविका विकल्पों की अनिश्चितता को दर्शाता है। कौशल से होने वाली आय के संदर्भ में यह पाया गया कि केवल कुछ ही उत्तरदाताओं को नियमित आय प्राप्त होती हैए जबकि अधिकांश को कभी-कभी या बिल्कुल नहीं। इसका तात्पर्य यह है कि परम्परागत कौशल वर्तमान में मुख्य आजीविका के रूप में स्थापित नहीं हो पाए हैं। अधिकांश मामलों में कौशल आधारित आय कुल पारिवारिक आय में कम योगदान करती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कौशल गतिविधियाँ पूरक आजीविका के रूप में तो विद्यमान हैंए किंतु सतत आजीविका का मजबूत आधार नहीं बन पाई हैं। बाजार तक पहुँच

के संदर्भ में हाट-बाजार और मेलों में बिक्री प्रमुख माध्यम पाए गए। कुछ उत्तरदाता बिचौलियों के माध्यम से उत्पाद बेचते हैंए जिससे उन्हें उचित मूल्य नहीं मिल पाता। सरकारी या संस्थागत हस्तशिल्प विपणन चैनलों तक पहुँच सीमित पाई गई। यह स्थिति ग्रामीण विकास ढाँचे की कमजोर कड़ी को उजागर करती हैए जहाँ संरचनात्मक समर्थन की कमी के कारण कौशल आधारित उत्पादों का उचित मूल्य संवर्धन नहीं हो पा रहा है। प्रशिक्षण अनुभवों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि सीमित संख्या में उत्तरदाताओं ने सरकारी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया है। प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों में से भी सभी ने आय में स्पष्ट सुधार अनुभव नहीं किया। कुछ ने कार्य क्षमता में सुधार स्वीकार कियाए जबकि कई ने प्रशिक्षण को व्यावहारिक बाजार अवसरों से असंबद्ध बताया। इससे यह संकेत मिलता है कि वर्तमान प्रशिक्षण मॉडल स्थानीय संसाधनों और बाजार की मांग से पर्याप्त रूप से जुड़ा नहीं है। समस्याओं के संदर्भ में कच्चे माल की कमीए बाजार मूल्य की समस्याए प्रशिक्षण का अभाव और सरकारी सहयोग की सीमित उपलब्धता प्रमुख बाधाएँ रहीं। ये बाधाएँ यह दर्शाती हैं कि कौशल आधारित आजीविका को सतत बनाने के लिए केवल व्यक्तिगत प्रयास पर्याप्त नहीं हैंय इसके लिए संस्थागत समर्थन और ग्रामीण विकास संरचनाओं की आवश्यकता है। सतत आजीविका की संभावनाओं पर उत्तरदाताओं की राय मिश्रित रही। एक महत्वपूर्ण वर्ग ने माना कि परम्परागत कौशल से सतत आजीविका संभव हैए जबकि कुछ ने आंशिक सहमति और कुछ ने असहमति व्यक्त की। यह विविध दृष्टिकोण इस तथ्य को रेखांकित करता है कि कौशल आधारित आजीविका की सफलता स्थानीय परिस्थितियोंए बाजार संपर्क और नीतिगत समर्थन पर निर्भर करती है। इन परिणामों से यह स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि मुरिया जनजाति में सतत कृषि आधारभूत आजीविका सुरक्षा प्रदान करती हैए जबकि कौशल विकास आय विविधीकरण का संभावित माध्यम है। ग्रामीण विकास संरचनाओं (बाजारए प्रशिक्षणए वित्तीय सहायता) के अभाव में कौशल आधारित आजीविका अपनी पूर्ण क्षमता प्राप्त नहीं कर पा रही है। अतः सतत कृषिए कौशल विकास और ग्रामीण विकास के समन्वित हस्तक्षेप से ही मुरिया समुदाय के लिए दीर्घकालिक सतत आजीविका संभव है।

**9ण्चर्चा (**क्पेबनेपवदद्धरू. प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि बस्तर जिले की मुरिया जनजाति में आजीविका की संरचना बहुस्तरीय हैए जहाँ कृषि आधारभूत आजीविका सुरक्षा प्रदान करती है और परम्परागत कौशल आय के वैकल्पिक स्रोत के रूप में मौजूद हैं। हालांकिए कौशल आधारित गतिविधियाँ वर्तमान में आय की स्थिरता सुनिश्चित करने में सीमित भूमिका निभा रही हैं। यह स्थिति इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि सतत कृषिए ग्रामीण विकास और कौशल विकास के बीच अपेक्षित समन्वय का अभाव है। कौशल गतिविधियों से नियमित आय का अभाव यह दर्शाता है कि परम्परागत हस्तकला एवं कुटीर उद्योग बाजार की मांगए मूल्य संवर्धन और विपणन नेटवर्क से पर्याप्त रूप से जुड़े नहीं हैं। हाट-बाजार और मेलों पर निर्भरता अल्पकालिक बिक्री तक सीमित हैए जिससे आय अस्थिर रहती है। बिचौलियों

की भूमिका उत्पादकों के लाभांश को कम कर देती है। यह निष्कर्ष ग्रामीण बाजार संरचना की कमजोरियों की ओर संकेत करता हैए जहाँ स्थानीय उत्पादकों के लिए प्रत्यक्ष बाजार संपर्क सीमित है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता भी सीमित पाई गई। यद्यपि कुछ उत्तरदाताओं ने कौशल में सुधार अनुभव कियाए परंतु प्रशिक्षण के बाद आय में स्थायी वृद्धि का अभाव यह दर्शाता है कि प्रशिक्षण कार्यक्रम उत्पादन कौशल तक सीमित हैं और उद्यमिताए विपणन तथा मूल्य श्रृंखला से जुड़ी क्षमताओं को पर्याप्त रूप से विकसित नहीं करते। यह स्थिति कौशल विकास नीतियों में व्यावहारिक अभिमुखता की कमी को रेखांकित करती है। सतत कृषि के संदर्भ में यह स्पष्ट है कि कृषि मुरिया समुदाय की खाद्य सुरक्षा और न्यूनतम आय स्थिरता का आधार बनी हुई है। तथापिए कृषि उत्पादकता की सीमाएँ और जलवायु संबंधी जोखिम इस आजीविका को अस्थिर बना सकते हैं। यदि कृषि को कौशल आधारित मूल्य संवर्धन गतिविधियों (जैसे कृषि-प्रसंस्करणए स्थानीय उत्पादों की ब्रांडिंग) से जोड़ा जाएए तो ग्रामीण आय संरचना अधिक लचीली और टिकाऊ बन सकती है। इस प्रकारए अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि कौशल विकासए सतत कृषि और ग्रामीण विकास को पृथक हस्तक्षेपों के रूप में नहींए बल्कि एक समन्वित आजीविका रणनीति के रूप में लागू करना आवश्यक है। यह समन्वय ही मुरिया जनजाति की आजीविका को अल्पकालिक सहायक आय से दीर्घकालिक सतत आजीविका में रूपांतरित कर सकता है।

10ण**निष्कर्ष एवं नीतिगत सुझाव (**ब्वदबसनेपवद – त्मबवउउमदकंजपवदेद्धरू. अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मुरिया जनजाति की वर्तमान आजीविका संरचना कृषि-प्रधान हैए जबकि परम्परागत कौशल पूरक भूमिका निभाते हैं। कौशल आधारित गतिविधियाँ अभी सतत आजीविका का सशक्त माध्यम नहीं बन पाई हैंए जिसका मुख्य कारण बाजार तक सीमित पहुँचए कच्चे माल की अनिश्चित उपलब्धताए प्रशिक्षण की प्रासंगिकता में कमी तथा संस्थागत सहयोग का अभाव है।

**नीतिगत एवं व्यावहारिक सुझाव निम्नलिखित हैं–**

- **सतत कृषि का सुदृढ़ीकरण:** बहुफसली खेतीए जैविक कृषि और स्थानीय संसाधनों पर आधारित कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित किया जाएए जिससे खाद्य सुरक्षा के साथ आय स्थिरता भी बढ़े।
- **कौशल आधारित मूल्य संवर्धन:** बाँस शिल्पए काष्ठ शिल्प और अन्य पारम्परिक कौशलों को डिजाइन नवाचारए पैकेजिंग और गुणवत्ता मानकीकरण से जोड़ा जाए।
- **बाजार संपर्क का विस्तार:** उत्पादकों को प्रत्यक्ष बाजार मंचोंए सहकारी समितियों और डिजिटल विपणन प्लेटफॉर्म से जोड़ा जाए ताकि बिचौलियों पर निर्भरता कम हो।
- **समेकित प्रशिक्षण मॉडल:** प्रशिक्षण कार्यक्रमों में केवल तकनीकी कौशल ही नहींए बल्कि उद्यमिताए वित्तीय साक्षरता और विपणन रणनीतियों को भी शामिल किया जाए।

- **संस्थागत एवं वित्तीय सहयोग:** सूक्ष्म-वित्तए स्वयं सहायता समूहों और सरकारी योजनाओं के माध्यम से कच्चे माल और प्रारंभिक पूँजी की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
- **सांस्कृतिक संरक्षण एवं युवाओं की भागीदारी:** परम्परागत कौशलों को सांस्कृतिक पहचान से जोड़कर युवाओं में गौरव बोध उत्पन्न किया जाएए जिससे कौशलों का पीढ़ीगत हस्तांतरण सुदृढ़ हो।

  इन हस्तक्षेपों के माध्यम से मुरिया जनजाति के लिए सतत कृषिए ग्रामीण विकास और कौशल विकास का समन्वित मॉडल विकसित किया जा सकता हैए जो दीर्घकालिक आजीविका सुरक्षा और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में प्रभावी सिद्ध होगा।

**संदर्भ ग्रंथ :-**

1ण म्सूपदए टण ;1947द्धण *जीम डनतपं ंदक जीमपत हीवजनसण* व्गवितक न्दपअमतेपजल च्तमेण

2ण हालदारए देबाशीषए – प्रेमजीत. (2026द्धण मुरिया जनजातीय कौशल विकास के माध्यम से सतत आजीविका पर प्रभाव: बस्तर जिले के विशेष संदर्भ में. *प्दजमतदंजपवदंस श्रवनतदंस वि स्मंकपदह त्मेमंतबी च्नइसपबंजपवद ;प्श्रस्त्च्द्धए 7;2द्धए*

3ण ैमदए ।ण ;1999द्धण *क्मअमसवचउमदज ं तिममकवउण* व्गवितक न्दपअमतेपजल च्तमेण

4ण बिंउइमतेए त्णए – ब्वदूंलए ळण ;1992द्धण ैनेजंपदंइसम तनतंस सपअमसपीववकेरू च्तंबजपबंस बवदबमचजे वित जीम 21ेज बमदजनतलण प्क्ै क्पेबनेेपवद च्ंचमतण

5ण ज्पतामलए ैण ;2021द्धण ैवबपव.मबवदवउपब ंदक सपजमतंबल ेजंजने ंउवदह ंसइं जतपइमे वि ठेंजंतए बींजजपेहंतीण *त्मेमंतबी त्मअपमू प्दजमतदंजपवदंस श्रवनतदंस वि डनसजपकपेबपचसपदंतल*ए 6;1द्धए 80दृ85ण

6ण गंगंए टण ;2014द्धण *ैजंजमए ेवबपमजल ंदक जतपइमेरू म्ेेंले पद चवेज.बवसवदपंस प्दकपंण* च्मंतेवदण

7ण न्छैम्ब्व् ;2015द्धण *ैपससे कमअमसवचउमदज वित पदबसनेपअम ंदक ेनेजंपदंइसम हतवूजीण* न्छैम्ब्व् च्नइसपीपदहण

8ण क्पूंदए ैणए – ैपदहीए ैण ;2023द्धण ठेंजंत ।म ंकपअंेप.ीमजतं ।प ेंदोतपजप ंनत रममअंद चंककींजपरू ैंउरींजतपलं ंकीलंलंदण

9ण जैनए एस. (2021). भारत में हो आतदवासी सम दायः भाषाई और सातहद्धत्यक पहलू. *श्रवनतदंस वि ।कअंदबमक ैजनकपमे पद त्मेमंतबी*ए 6(1)ए 12014-12019. (उद्धृत सांदभथ स्रोत से)

10ण कुमारए आर.ए – वमश्राए एस. (2021द्धण आतदवासी तवद्यातथायों के जीवन कौशल तवकास में पाररवाररक और साम दातयक सहयोग. सेज पस्िकेशन्सए नई वदल्ली. (उद्धृत सांदभथ स्रोत से)

11ण िमाथए र.ए – वसांहए प. (2019द्धण आतदवासी तवद्यातथायों की तशक्षा और कौशल तवकास में सामातजक समथान की भूतमका. जनजातीय वशक्षा अध्ययन पवत्काए 7;2द्धए 45दृ56ण ;उद्धृत सांदभथ स्रोत से)

12ण मीनूए रानी. (2023द्धण आतदवासी तकशोरों में जीवन कौशल का अध्ययन. *त्मेमंतबीळंजम* ;च्तमचतपदजद्धण ;उद्धृत सांदभथ स्रोत से)

13ण वसांहए ए. के. (2023द्धण जनजातीय सम दाय का शैतक्षक तवकासः एक सामातजक परप्रेक्ष्य. *श्रवनतदंस वि म्उमतहपदह ज्मबीदवसवहपमे ंदक प्ददवअंजपअम त्मेमंतबी*ए 10;10द्धए 32दृ39ण ;उद्धृत सांदभथ स्रोत से)

14ण भारतीय सामावजक सशस्क्तकरण शोध पवत्का (2025द्धण भारतीय सामातजक सशद्धिकरण शोध पतिका – ैच्छ रू 3049.334ग्ण *प्दकपंद ैवबपंस म्उचवूमतउमदज त्मेमंतबी श्रवनतदंस*ण

15ण ौनासंए त्ण ;2018द्धण बिंदहपदह ेजंजने वि जतपइंस ूवउमद पद ठेंजंत कपेजतपबज वि बींजजपेहंतीण *प्दजमतदंजपवदंस श्रवनतदंस वि क्मअमसवचउमदज त्मेमंतबी*ए 8;6द्धए 21045दृ21049ण

16ण च्ंदकमलए टण ज्ञण्ए मज ंसण ;2020द्धण क्वउमेजपबंजपवद चेंज ंदक निजनतम वि जतपइंस ंहतपबनसजनतम पद ठेंजंतण *श्रवनतदंस वि चैंतउंबवहदवेल ंदक चैलजवबीमउपेजतल*ए 9;4द्धए 400दृ405ण

17ण ज्ञीनतौपकए ण्ण ;2025द्धण थ्मउंसम जतपइंस विसा ंदक वितमेजए ं उमंदे वि सपअमसपीववक ंदक ेनेजंपदंइसम कमअमसवचउमदजरू । बेंम ेजनकलण *प्दजमतदंजपवदंस म्कनबंजपवद ंदक त्मेमंतबी श्रवनतदंस*ण

18ण ठंतदूंसए च्ण ज्ञण्ए – ज्ञीनतौपकए ण्ण ;2025द्धण स्पअमसपीववक ंदक पदबवउम ेवनतबमे वि जतपइंस तिउमते वि श्रंतपइंही कपेजतपबज ंदक जमबीदवसवहपमे चमदमजतंजपवदण *प्दजमतदंजपवदंस म्कनबंजपवद ंदक त्मेमंतबी श्रवनतदंस*ण

19ण प्दजमतदंजपवदंस ब्वनदबपस वद ैवबपंस ैबपमदबम त्मेमंतबी ;2025द्धण **ब्वउचसमजमक तमेमंतबी ेजनकपमे कृ छंजपवदंस भ्नउंद त्पहीजे ब्वउउपेपवद**ण *छभ्त्ब प्दकपं* तमचवेपजवतलण